



मेरी लेडी विल्किंसन

जिलेट नैरेटिव — नांदो, लेखक

gillettenarrative.com

उसी शाम मैंने उसे एक संदेश भेजा, यह बताते हुए कि मैं पाँच दिन रुकूँगा, और यह पूछते हुए कि वह इस समय को कैसे बिताना चाहती है। मुझे बमुश्किल अपना फ़ोन नीचे रखने का मौक़ा मिला। दो मिनट से भी कम में उसका जवाब आ गया।

“कल सुबह ग्यारह बजे। यहाँ, ईटन में मेरे विला पर। हम अंग्रेज़ी चाय पिएँगे। मुझे बताओ तुम कहाँ ठहरे हो। मैं पता अपने ड्राइवर को दे दूँगी और वह तुम्हें लेने आ जाएगा।”

मैं मुस्कुरा दिया। संगठन सैन्य था। शालीनता ब्रिटिश थी। न्योता ठुकराना नामुमकिन था। मैंने तुरंत जवाब दिया। “साढ़े दस बजे मैं फ़ोर सीज़न्स होटल के सामने खड़ा रहूँगा। मैं पास ही ठहरा हूँ। मैं पैदल आ जाऊँगा।”

फिर मैं कुछ पल उस संदेश को देखता रहा, इससे पहले कि एक और भेजूँ। मैं सचमुच अपनी इस मुलाक़ात में डूबा हुआ था। शायद उससे कहीं ज़्यादा, जितना मैं स्वीकार करने को तैयार था। मुझे यह एहसास हो रहा था कि मैं बिना किसी गुरु के एक समारोह की तैयारी कर रहा हूँ।

अगले दिन हम दोनों ठीक समय पर पहुँच गए। ड्राइवर का नाम डॉमिनीक था। वह फ़्रांसीसी मूल का था।

शिष्ट। विवेकी। बिल्कुल सुसंस्कृत। जैसे-जैसे हम उन गलियों से गुज़रे, एक अजीब-सा एहसास मुझ पर छा गया। ऐसा जैसे मैं पहले भी यहाँ आ चुका हूँ। मेरी याददाश्त अचानक 1993 में लौट गई। वही जगह। जिलेट के एक पुराने सहकर्मी के साथ। मैंने सोचा कि यह महज़ एक इत्तिफ़ाक़ है। उन तोहफ़ों में से एक, जो ज़िंदगी कभी-कभी बिना माँगे ही दे देती है।

मैं महल में दाखिल हुआ। वह इसे विला ही कहती रही, अपनी स्वाभाविक विनम्रता के चलते। मेरे लिए, यह एक महल था। मेरी जिंदगी में देखा हुआ दूसरा महल। पहला ट्रांसिल्वेनिया का ब्रान महल था। मैं वहाँ एक असाधारण निर्देशिका से मिलने गया था, एक शानदार स्त्री, जिसने काउंट व्लाद की मेज़बानी की थी, जो व्लाद द इम्पेलेर—यानी ड्रैकुला—के नाम से ज़्यादा मशहूर था।

मैंने मैगी को सोफ़े के बग़ल में एक आरामकुर्सी पर बैठे पाया। उसने मेरा गर्मजोशी से स्वागत किया। सहज ही, मैंने उसका हाथ चूमने के लिए बढ़ाया। पर उसने इसके बजाय फ़्रांसीसी शिष्टाचार अपनाया। तीन चुंबन। हम बस दो लोग थे, पीढ़ियों से जुदा और एक ऐसी कहानी से बँधे हुए, जिसे हममें से किसी ने भी अभी सुनाकर ख़त्म नहीं किया था। और अपने आगमन के बाद पहली बार, लंदन मुझे अब कोई शहर नहीं लगा। यह एक मंज़िल लगा।

मैंने उसे बताया कि जहाँ तक मुझे पता है, अंग्रेज़ी चाय की रस्म शाम के पाँच बजे से जुड़ी है। कम से कम स्कूल में तो मुझे यही सिखाया गया था। पर सुबह के ग्यारह बजे, मैं समझ नहीं पा रहा था कि आख़िर क्या बदल गया। वह मुस्कुरा दी। फिर उसने उस आत्मविश्वास के साथ जवाब दिया, जो सिर्फ़ उन्हीं का होता है, जो इतना लंबा जी चुके हों कि उन्हें अब किसी को क़ायल करने की ज़रूरत ही न रह जाए।

“अंग्रेज़ चाय तभी पीते हैं, जब वे आराम करते हुए नज़र आते हैं। दरअसल, यही वह पल होता है जब वे सोचते हैं। यही वह पल होता है जब वे फ़ैसले लेते हैं। कोई तय घड़ी नहीं होती। पाँच बजे की चाय तो बस एक ढाँचा है, जिसे किसी ने काम से एक विराम को जायज़ ठहराने के लिए संस्थागत बना दिया।”

मैं बिना टोके सुनता रहा। वह एक मज़बूत स्त्री थी। दृढ़। संकल्पवान। शालीन। अथक। अडिग। वह इस्पात की बनी थी। अपनी तलवारों की तरह। वह मैगी थी। वह मेरी लेडी विल्किंसन थी।

फर्दिनांदो फ्रेगा